

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 17, प्रार्थना

पर यीशु, लूका 11:1-13

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, प्रार्थना पर यीशु, लूका 11:1-13।

लूका के सुसमाचार पर बिब्लिका ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

मैं इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करने के लिए व्यक्तिगत रूप से आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ, और मुझे आशा है कि मेरे प्रिय सहयोगी टेड हिल्डेब्रांट जो काम कर रहे हैं, उससे आप सीख रहे हैं और इस अच्छे काम से लाभान्वित हो रहे हैं, जिसे करने में वे इतना समय और प्रयास लगा रहे हैं। जैसे-जैसे हम अपनी व्याख्यान श्रृंखला के साथ आगे बढ़ेंगे, आपको पिछले व्याख्यान से याद होगा कि हमने अच्छे सामरी के दृष्टांत के माध्यम से जाना और लूका के सुसमाचार के अध्याय 10 में मार्था और उसकी बहन मरियम के घर में यीशु के साथ चर्चा समाप्त की। अध्याय 11 में ही, हम देखेंगे कि लूका मैथ्यू के पर्वत पर उपदेश में पाई जाने वाली कुछ सामग्री को लेने जा रहा है, और सटीक रूप से कहें तो, हम बिलकुल शुरुआत में प्रार्थना पर चर्चा पाएंगे, कुछ ऐसा जो मैथ्यू अध्याय 6 में होता है जब यीशु ने धर्मपरायणता के बारे में बात करना शुरू किया।

तो, आइए लूका अध्याय 11 की आयत 1 से शुरू करें और कुछ ऐसी बातों पर नज़र डालें जो लूका ने हमसे साझा की हैं, कम से कम आयत 1 से आयत 13 तक। अब, यीशु एक निश्चित स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे, और जब उन्होंने प्रार्थना समाप्त की, तो उनके शिष्यों में से एक ने उनसे कहा, प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएँ। जैसा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को सिखाया था, उसने उनसे कहा, जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो, पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए।

हमारी दिन भर की रोटी हमें प्रतिदिन दे, और हमारे पापों को क्षमा कर। क्योंकि हम भी अपने हर अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में नहीं लाते। फिर उस ने उन से कहा, तुम में से ऐसा कौन है, जिसका कोई मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर कहे, कि हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे।

मेरा एक मित्र यात्रा पर आया हुआ है, और मेरे पास उसके सामने रखने के लिए कुछ भी नहीं है। और वह भीतर से उत्तर देगा, मुझे परेशान मत करो; अब दरवाज़ा बंद है, और मेरे बच्चे मेरे पास बिस्तर पर हैं। मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता।

मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि वह मित्र होने के कारण उसे उठकर न दे, तौभी उसकी नासमझी के कारण उसे जो कुछ आवश्यक हो, वह उठकर देगा। और मैं तुम से कहता हूँ, मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे।

खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में ऐसा कौन पिता होगा, कि यदि उसका पुत्र मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे? या यदि वह अण्डा मांगे, तो उसे बिच्छू दे? सो जब तुम जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा? प्रार्थना और दृढ़ता।

लूका अध्याय 11, श्लोक 1 से 13 में, मैं आपको बाकी अंश पर चर्चा करने से पहले एक व्यापक रूपरेखा देना चाहता हूँ। सबसे पहले, हम देखते हैं कि यीशु को प्रार्थना करने की आदत है, और प्रार्थना करने की उनकी आदत के कारण ही एक ऐसे अवसर पर, उनके शिष्यों में से एक उनके पास आया, उनके आध्यात्मिक अनुशासन के एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्से को देखते हुए और पूछा कि वे भी उस पैटर्न का पालन कैसे कर सकते हैं। यहाँ, हम शिष्यत्व का एक और आयाम देखते हैं: एक शिष्य गुरु से सीखना चाहता है।

यहाँ शिष्य विशेष रूप से प्रार्थना करना सीखना चाहते हैं। दूसरी बात जो मैं आपको इस सत्र में आगे बढ़ने के साथ-साथ थोड़ा और समझाऊँगा वह है रिश्तेदारी और दोस्ती की धारणा। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के राज्य की शिक्षाओं में, यीशु इसे एक पारिवारिक मामले के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

यह कोई न्यायालय का परिदृश्य नहीं है जिसमें एक न्यायाधीश यहाँ-वहाँ लोगों से निपट रहा है और जो कुछ भी वह कर सकता है, करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन यीशु एक पिता के बारे में बात करेंगे। प्रार्थना की शुरुआत में, वह उसे स्वर्ग में पिता के रूप में संदर्भित नहीं करेगा जैसा कि हम मैथ्यू में पाते हैं। वह उसे केवल एक पिता के रूप में संदर्भित करेगा। बाद में, वह खुद को स्वर्ग में पिता के रूप में संदर्भित करेगा।

और फिर, वह फ्रांस में हो रही किसी घटना का उदाहरण देगा। और फिर वह रिश्तेदारी की धारणा को फिर से शुरू करेगा और फिर भी उन्हें दिखाएगा कि जो दांव पर लगा है वह पिता और बच्चों के बीच एक संबंधपरक मुद्दा है, अगर आप चाहें, तो उन्हें पिता के पास जाते समय प्रार्थना के बारे में सोचना चाहिए और फिर यह कहना शुरू करना चाहिए कि उन्हें पता होना चाहिए कि ईश्वर के पास उनके सांसारिक स्वामियों की तुलना में उनके लिए बेहतर इरादे हैं। पंचलाइन पर जोर स्पष्ट होगा कि न केवल ल्यूक स्वर्ग में पिता का उल्लेख करेगा, बल्कि आप देखेंगे कि ल्यूक पवित्र आत्मा पर अपने धर्मशास्त्र के जोर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा फिर से शुरू करेगा, मैथ्यू के विपरीत, यह कहने के लिए कि वास्तव में, स्वर्ग में पिता पवित्र आत्मा भी देगा।

करिश्माई ल्यूक को जो भी मिल जाए उसके बारे में बात करना पसंद है। जैसा कि आपको अध्याय 11, श्लोक 13 से पढ़ना याद होगा, ल्यूक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि यह पंक्ति छूट न जाए। तो अगर तुम, जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा कितना अधिक देगा? आइए अब हम उन कुछ बातों पर बारीकी से नज़र डालना शुरू करें जो यीशु प्रार्थना के संबंध में कहेंगे।

शिष्यों ने प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहा। ऐसा करते हुए यीशु ने उन्हें सिर्फ़ यह नहीं बताया कि मेरे पीछे आओ और यह कहो, बल्कि वह उन्हें पिता के साथ रिश्ते से भी परिचित करवाएगा। वह पिता के सम्मान के बारे में बात करेगा।

वह राज्य और उस भूमिका पर जोर देगा जो पिता पहले से ही प्रदान करेंगे या आमतौर पर उस माहौल में प्रदान करेंगे जब वे कमाने वाले होते हैं और परिवार के लिए भोजन उपलब्ध कराते हैं। और यीशु परिवार के संबंध आयामों के बारे में बात करेंगे, अर्थात् क्षमा करना और परिवार के मुखिया द्वारा परिवार का नेतृत्व करना। अब, मुझे उन पाँच वस्तुओं को खोलने का समय दें जिन्हें मैंने रेखांकित किया है।

जब यीशु ने शिष्यों से बात की और कहा, जब तुम प्रार्थना करो, तो पिता से प्रार्थना करो। मैथ्यू में, हम जानते हैं कि वह हमारे पिता के बारे में बात करता है। वह न केवल मेरे बल्कि हमारे सामूहिक पिता के बारे में एक सामूहिक नोट लाता है और फिर पिता से प्रार्थना करने के बारे में बात करना शुरू करता है।

लूका सिर्फ़ इतना कहता है, पिता। लूका का मतलब यह नहीं है कि यह सिर्फ़ एक पिता के लिए व्यक्तिगत मामला होना चाहिए, बल्कि लूका एक पिता को सीधे संबोधित करते हुए कह रहा है, उससे प्रार्थना करो, पिता, मानो कह रहा हो, यह मेरा पिता है। लूका हमें वही दिखा रहा है जो हमने अब तक लूका में कहीं और देखा है, जहाँ यीशु प्रार्थना में लग जाता है और परमेश्वर के साथ इस अंतरंग संबंध में आ जाता है और परमेश्वर को पिता के रूप में संदर्भित करता है।

इसका मतलब यह है कि प्रार्थना कोई अनुष्ठान नहीं है। प्रार्थना किसी मंदिर में किया जाने वाला कोई चढ़ावा नहीं है। प्रार्थना कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे कोई व्यक्ति किसी स्थान पर फेंक देता है।

प्रार्थना एक रिश्ता है, दो लोगों या एक या एक से ज़्यादा लोगों के बीच एक अच्छा रिश्ता, जैसे पिता और उसके बच्चे। इस अर्थ में, जब बच्चे पिता के पास आते हैं, तो ल्यूक उन्हें याद दिलाना पसंद करते हैं कि उन्हें बिना किसी डर के ऐसा करना चाहिए। टीम में पिता की धारणा लाने से रिश्तेदारी के कुछ तत्व भी सामने आते हैं।

प्राचीन दुनिया प्रतियोगिता में शामिल हुई। मैंने संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने छात्रों से अक्सर पिता की अवधारणा के बारे में पूछा है। यह मामला लगातार बढ़ रहा है क्योंकि हम कक्षा में एक के बाद एक परिदृश्यों से गुजरते हैं कि मेरे बहुत से छात्रों का अपने पिता के साथ अच्छा रिश्ता नहीं है।

उनमें से कुछ को भगवान को अपना पिता कहने में संघर्ष करना पड़ेगा। उनमें से कुछ के घर पर उनके पिता हैं, लेकिन उनके पिता के साथ उनके अच्छे संबंध नहीं हैं क्योंकि उन्होंने पिता पर अत्याचारी पिता की यह अवधारणा थोपी है। जैसा कि कुछ लोग स्वीकार करेंगे, पिता ने ऐसा कुछ भी नहीं किया होगा जिसके लिए वह ऐसा करे, लेकिन उन्हें कभी-कभी एक माँ के साथ पढ़ाया जाता है जो शायद कुछ नारीवादी एजेंडे का आकलन करने की कोशिश करने के लिए बहुत उत्सुक हो, शायद हद से आगे निकल जाए।

अब, मैं इसे स्पष्ट करना चाहूँगा। मैं नारीवादी सशक्तिकरण और महिला सशक्तिकरण के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ, यह सब इसके लिए है। मेरा पालन-पोषण एक अकेली माँ ने किया जो बहुत ही मजबूत थी और महान कार्य कर रही थी, और मैं दो बेटियों का पालन-पोषण कर रही हूँ, जिन्हें मैं हमेशा कहती हूँ कि वे जो कुछ भी बनना चाहती हैं, वह बन सकती हैं; और मुझे विश्वास है कि वे ऐसा कर सकती हैं, और मैं उन्हें मुझसे बेहतर करने के लिए बड़ा कर रही हूँ।

तो, यहाँ मुद्दा लिंग का नहीं है, लेकिन मेरे कुछ छात्रों ने मेरे सामने कबूल किया है कि, वास्तव में, उन्हें पुरुषों को एक निश्चित तरीके से देखना सिखाया गया है। वे अपने पिता में पिता की छवि को नहीं दर्शा सकते। दुखद बात यह है कि जब मैं अपने छात्रों के बारे में सोचता हूँ, जो युवा पुरुष हैं, जो पितृत्व की अवधारणा से जूझते हैं और कैसे वे कल पिता बन सकते हैं।

जब लूका कहता है, जब तुम प्रार्थना करते हो, तो लूका में यीशु ने कहा, परमेश्वर को पिता कहो। वह उस पिता के बारे में बात नहीं कर रहा है जो तुम्हारे और मेरे पास हो सकता है जिसे हम पसंद नहीं करते या जिसके बारे में हमारी अलग-अलग अवधारणाएँ हो सकती हैं या, आप जानते हैं, हम उस पिता के साथ जुड़ने के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं। आदर्श पिता का विचार द्वितीय मंदिर यहूदी माता-पिता में सकारात्मक था।

पिता घर का मुखिया होता है। पिता घर के सम्मान का संरक्षक होता है। पिता परिवार की सुरक्षा करता है, मार्गदर्शन करता है और परिवार के सम्मान को अक्षुण्ण रखता है।

पिता परिवार के लिए सभी अच्छी चीजों को सुरक्षित रखता है। पिता परिवार के लिए एक राज्य विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत करता है। पिता बच्चों के लिए एक विरासत छोड़ जाता है ताकि उसके जाने के बाद वे जीवित रह सकें।

पिता का पूरा जीवन परिवार की भलाई के लिए समर्पित होता है। घर के मुखिया के रूप में, घर में जो भी गलत होता है, उसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ता है। अगर घर में कोई भी ठीक नहीं चल रहा है, तो उसे शर्म आनी चाहिए।

पिता तब वह व्यक्ति बन जाता है जो, हाँ, घर का मुखिया होता है, लेकिन यह कोई अत्याचारी घर नहीं है, कोई अत्याचारी नेता नहीं है, बल्कि वह घर का मुखिया बन जाता है जो अपने परिवार की देखभाल करता है, अपनी पत्नी के साथ मिलकर काम करता है, या यहूदी समुदाय में, कभी-कभी पत्नियाँ भी। लेकिन आपको यह जानना चाहिए। यीशु जिस पिता का उल्लेख करेंगे और जो कानों में गूँजेगा वह एक बच्चे की इच्छा की सकारात्मक छवि है।

घर की एक महिला को प्यार महसूस होता है। घर के एक युवा पुरुष को मॉडलिंग करने की इच्छा होती है। वह जो सबसे अच्छा काम कर रहा है।

लेकिन ल्यूक इसे और भी ऊपर ले जाएगा क्योंकि, पाठ में, वह उसे स्वर्ग में पिता के रूप में संदर्भित करेगा। क्या मैं इस व्याख्यान में हस्तक्षेप कर सकता हूँ और आपको याद दिलाने की

कोशिश कर सकता हूँ कि आपके पिता के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं हो सकते हैं? पिता के साथ आपके लिए पिता की अवधारणा बहुत ही कठिन हो सकती है।

लेकिन क्या मैं आपको याद दिला सकता हूँ कि स्वर्ग में आपका पिता पृथ्वी पर आपके पिता जैसा नहीं है। कि पृथ्वी पर कोई भी प्रेम करने वाला पिता स्वर्ग में पिता के कामों और गुणों की तुलना में नहीं हो सकता। क्या मैं आपको प्रोत्साहित कर सकता हूँ कि आप मेरे साथ मिलकर एक प्रेमपूर्ण और देखभाल करने वाले पिता की अवधारणा को अपनाएँ, जिसे हम ईश्वर कहते हैं, जिसके पास हम जा सकते हैं, जिसे हम गले लगा सकते हैं, जिसे हम प्यार कर सकते हैं और महसूस कर सकते हैं कि वह हमें प्यार करता है और हमारी देखभाल करता है।

मैं यहाँ आपसे निजी तौर पर बात करना चाहूँगा। मेरा पालन-पोषण एक अकेली माँ ने किया। मेरे पिता मुझसे बहुत प्यार करते थे, लेकिन मेरे साथ नहीं थे।

वह कभी-कभार आता है, मुझे सारी अच्छी चीजें देता है, और फिर चला जाता है। लेकिन मुझे हमेशा पता था कि वह मुझसे प्यार करता है, लेकिन वह मेरे साथ नहीं था। मैं कभी भी उस तरह का पिता नहीं बनना चाहता था।

मैं एक ऐसा पिता बनना चाहता था जो हमेशा मौजूद रहे। मैं एक ऐसा पिता बनना चाहता था जो अपने बच्चों के लिए हमेशा मौजूद रहे। इसलिए, मेरी तरह, आपके पास भी ऐसा पिता नहीं हो सकता जो हमेशा मौजूद रहे।

या फिर मेरी तरह, आपके पास भी एक पिता हो सकता है जिसकी तरह आप नहीं बनना चाहते। लेकिन जब हम प्रार्थना में आते हैं, तो लूका हमें याद दिलाता है, जैसा कि यीशु ने शिष्यों से कहा था, कि प्रार्थना करो, पिता, पिता, पिता, जैसा कि मेरी बेटियाँ करना चाहती हैं, पिता। और वे मुझसे एक सवाल पूछते हैं, हर सवाल, और हर सवाल।

कभी-कभी, मुझे ऐसा लगता है कि मैं उनके साथ परीक्षा दे रहा हूँ। वे मुझे सबसे कठिन प्रश्न देते हैं, जिनके उत्तर मेरे पास नहीं होते। लेकिन यह अच्छी बात है जब आपका अपने स्वर्गीय पिता के साथ अच्छा रिश्ता होता है; आप निडर होकर उनके पास आते हैं, और आप उन्हें संबोधित करते हैं, पिताजी, और आप उनसे बात करना शुरू करते हैं।

लूका कहता है कि जब आप प्रार्थना करते हैं, तो सूची में सबसे पहला आइटम जिसके लिए आपको प्रार्थना करनी चाहिए वह है कि उसका नाम पवित्र हो। ग्रीक शब्द का अर्थ है अलग रखा जाना, पवित्र किया जाना, सम्मानित किया जाना। इसका मतलब यह है कि जब आप प्रार्थना करते हैं, तो प्रभु यीशु मसीह के सच्चे शिष्य के रूप में आपके दिमाग में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक आपके स्वर्गीय पिता का सम्मान है।

वह आपकी सहायता कर सकता है, और आपके जीवन में और आपके जीवन के द्वारा उसका नाम आदर पा सकता है। उसका नाम महिमावान हो सकता है। उसका नाम पवित्र हो सकता है।

यह अंग्रेजी शब्द जो मैंने नहीं सुना है, बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है; माफ़ करें, अंग्रेजी मेरी पहली भाषा नहीं है। मैंने बहुत से लोगों को पवित्र होने के बारे में बात करते नहीं सुना। लेकिन आप देखिए, यह सम्मानित होने के बारे में बात कर रहा है।

मुझमें और मेरे ज़रिए तेरा नाम पवित्र हो। जब हम कहते हैं कि तेरा नाम पवित्र हो, तो असल में हम यही कह रहे होते हैं। यह नातेदारी के दायित्व का हिस्सा है।

बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान करने के लिए जीते हैं, और उनकी इच्छा होती है कि वे अपने माता-पिता का सम्मान करें। पिता को हमेशा इन बच्चों पर गर्व होता है कि वे कौन हैं। और बच्चों की इच्छा होती है कि वे वास्तव में कहें, मैं अपने पिता का सम्मान करने के लिए जीना चाहता हूँ। लेकिन अगली पंक्ति पर ध्यान दें।

जब तुम प्रार्थना करो, तो वह कहता है, प्रार्थना करो कि तुम्हारा राज्य आए। तुम्हारा शासन आए। आओ और शासन करो।

आओ और कार्यभार संभालो। आप देखिए, परमेश्वर का राज्य उन लोगों के जीवन, हृदय, मन और मामलों में परमेश्वर का शासन है, जिन्होंने उसकी अगुवाई और इच्छा के प्रति समर्पण किया है। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो वह कहता है, प्रार्थना करो कि तुम्हारा राज्य आए।

और यह एक शक्तिशाली प्रार्थना है क्योंकि यदि परमेश्वर का शासन काम कर रहा है, तो कोई भी व्यक्ति, कोई भी शक्ति आपके जीवन में परमेश्वर जो करने जा रहा है और करेगा, उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। वह कहता है, जब आप प्रार्थना करते हैं, तो उन लोगों के दिल में प्रार्थना करें जो जीविका खेती पर निर्भर रहते हैं और उनकी ज़रूरतें पूरी करें क्योंकि यीशु उनके साथ बड़े होंगे। प्रार्थना करें कि पिता हमें रोटी दे।

प्रार्थना करें कि पिता हमें कुछ खाने को दे। और आज मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में, कभी-कभी मुझे लगता है कि यह हमें यह देता है, वे शाब्दिक हैं। हर भोजन के साथ लगभग कोई अच्छी, चपटी, सुन्न रोटी आती है, और हम बैठते हैं, और हम इसे मोड़ते हैं, और हम इसे किसी चीज़ में डुबोते हैं, और हम खाते हैं।

और यह अच्छा है। यह अच्छा है। हमें यह बताइए: वे जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं।

हाँ, परिवार की ज़रूरतों को पूरा करना पिता की ज़िम्मेदारी है। लेकिन यहाँ उस व्याकरण में कुछ ऐसा है जिसे देखना बहुत दिलचस्प है। यीशु पिता के दायित्व के बारे में बात कर रहे हैं कि वह सब कुछ प्रदान करे।

लेकिन जब वह कहता है, आज हमें हमारी रोज़ की रोटी दो, तो रोज़ का अनुवाद किया गया शब्द बहुत ही दिलचस्प है। इस शब्द का अनुवाद रोज़ किया जा सकता है। इसलिए, यह रोज़ की रोटी हो सकती है।

यह उस रोटी को संदर्भित कर सकता है जिसकी हमें कल के लिए आवश्यकता है, या यह वह रोटी हो सकती है जो हमारे लिए आवश्यक है। मैं आपको स्क्रीन पर तीन विकल्प दूंगा ताकि आप उनका अनुसरण कर सकें। किसी भी तरह से, प्रार्थना जो सुझाव देती है वह यह है कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए, भगवान पर भरोसा करना चाहिए कि वह हमें आवश्यक भोजन प्रदान करेगा।

यह एक ऐसी प्रार्थना है जो उस भरोसे पर आधारित है जो एक पिता दे सकता है। और फिर लूका आगे प्रार्थना करने, पूछने, शिष्यों को हमारे पापों को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करना सिखाने के लिए आगे बढ़ता है। लूका और मत्ती दोनों में, क्षमा के दो आयाम हैं।

क्षमा करें जैसे ईश्वर क्षमा करता है और क्षमा करें जैसे हम एक दूसरे को क्षमा करते हैं। यदि आपको वकील के साथ पिछली चर्चा याद है, तो अपने प्रभु ईश्वर से प्रेम करें और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें। यहाँ, प्रार्थना संबंधपरक आयामों के दूसरे भाग में जाती है।

जब आप ऐसे माहौल में होते हैं जहाँ परिवार एक साथ होता है, और हर कोई हर किसी के काम में लगा होता है, तो कोई न कोई किसी को गलत करने वाला होता है। आप जानते हैं, मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि एक अद्भुत प्रजाति है जिसे हम लोग कहते हैं। जब लोग आपके पास नहीं होते, तो आप अकेलापन महसूस करते हैं।

कभी-कभी, जब वे आपके आस-पास नहीं होते, तो आप वाकई दुखी महसूस करते हैं। जब वे आपके पास होते हैं, तो कभी-कभी वे सिरदर्द बन जाते हैं। कभी-कभी, वे आपको खुश कर देते हैं।

कभी-कभी वे आपको बहुत दुखी कर देते हैं। कभी-कभी, वे आपको गलत तरीके से परेशान करते हैं। कभी-कभी, वे आपको गुदगुदी करते हैं जब आप गुदगुदी नहीं करवाना चाहते।

लेकिन आप देखिए, लोग तो लोग ही होते हैं, और लोग ही हमारे लिए सब कुछ हैं, और हमें हमेशा लोगों की ज़रूरत होगी। इसलिए, जब भी आप परिवार में होते हैं, तो एक संबंधपरक आयाम होता है। और अगर आप भगवान के घर की कल्पना करें, जिसमें इतने सारे बच्चे हों, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, तो आप बस कल्पना कर सकते हैं।

बहुत से लोग बहुत से लोगों के साथ गलत करेंगे। हमें क्षमा की आवश्यकता होगी। यीशु कहते हैं, परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना करें क्योंकि हम भी एक दूसरे को क्षमा करते हैं ताकि परमेश्वर के घराने में समूह की गतिशीलता ऐसी हो जो उदारता की भावना में निहित हो जो हमें एक दूसरे को क्षमा करने और अच्छे संबंध बनाने की अनुमति देती है।

एक कैथोलिक लड़के के रूप में, मैं आपको बता दूँ कि, कैथोलिक घर में बड़े होते हुए मैंने जो कुछ सीखा, उनमें से एक है प्रभु की प्रार्थना को दोहराना, मैथ्यू में जो संस्करण है, उसे डिडेचे में भी दोहराया गया है। और मैं एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया जहाँ मैं प्रभु की प्रार्थना को इतनी बार दोहराता हूँ, और कभी-कभी मैं पापस्वीकार करने जाता हूँ, पुजारी मुझे उसी तरह की प्रार्थना

देता है, और मैं बस, आप जानते हैं, और मैं बस आकर उन्हें दोहराता हूँ। और किसी बिंदु पर, मैं उस प्रार्थना का सार भूल जाता हूँ।

प्रार्थना का मेरे लिए कोई महत्व नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे मैं यीशु की शिक्षाओं के बारे में अपनी समझ बढ़ाता हूँ, मैं इसके संबंधपरक भाग को समझता हूँ। यीशु कह रहे हैं, जब तुम परमेश्वर के पास आओ, तो ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जिससे तुम जुड़ सको, ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जिसका सम्मान तुम बनाए रखना चाहते हो, ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जो तुम्हें प्रदान करने में सक्षम हो, उससे प्रदान करने के लिए कहो, ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जो तुम्हें क्षमा करने में सक्षम हो, उससे क्षमा करने के लिए कहो, ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जो तुमसे अपेक्षा करता है कि तुम घर में दूसरों को क्षमा करो जो गलती करते हैं या जो तुम्हारे विरुद्ध गलत करते हैं, और ऐसे परमेश्वर की कल्पना करो जो प्रलोभन में नहीं ले जाता, जो सही मार्गों पर ले जाता है, जो सही मार्ग पर ले जाता है, और प्रार्थना करो कि वह तुम्हारे जीवन में ये चीजें घटित करे।

और देखो, और देखो, यीशु शिष्यों को सिखा रहे हैं कि, वास्तव में, यदि आप एक शिष्य के रूप में परमेश्वर के साथ उस रिश्ते को मजबूत करते हैं, और आप उस आध्यात्मिक अनुशासन, अर्थात् प्रार्थना को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं, तो आप परमेश्वर द्वारा निर्देशित, निर्देशित और प्रदान किए जाएंगे। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि लोग सोचें कि परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देगा, इसलिए यीशु आगे बढ़कर वह दृष्टांत बताते हैं जो उन्होंने बताया था। उस दृष्टांत में, उन्होंने उस मित्र के बारे में बात की जो उनसे मिलने आया था।

और यहाँ, जब दोस्त आएगा, तो दोस्त आधी रात को आएगा। आपको पता होना चाहिए कि इस संदर्भ में, सम्मान और शर्म यहाँ एक बड़ा मुद्दा है। एक दोस्त के लिए एक दोस्त को जवाब न देना अगर दूसरे लोग सुनते हैं कि एक दोस्त बुला रहा है और दूसरा दोस्त मदद नहीं कर रहा है, तो यह शर्मनाक है।

सच्चे दोस्त ऐसा नहीं करते। परंपरा के अनुसार, जो दोस्त अपने दोस्त के दरवाजे पर दस्तक देता है, वह अंदर आता है। लेकिन कृपया, इस परिदृश्य के बारे में ऐसा न सोचें कि आप अमेरिका में हैं या आप किसी अफ्रीकी देश में हैं, और कोई अंदर आता है, और आप दरवाजा खोलते हैं या नहीं खोलते हैं।

नहीं। एक प्राचीन भूमध्यसागरीय घर की कल्पना करें जहाँ आप अपने परिवार के साथ सोते हैं। आप सभी एक अपेक्षाकृत बड़े घर में रहते हैं जिसमें एक दरवाज़ा है। दरवाज़ा बंद करने और जानवरों से सुरक्षित रखने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है जो संभावित रूप से घुसकर किसी को चोट पहुँचा सकते हैं।

इसलिए, अगर कोई अंदर आता है और कहता है कि वह व्यक्ति दस्तक दे रहा है, तो ऐसा करने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। और क्योंकि पूरा परिवार एक ही स्थान पर है, इसलिए यह आंदोलन लोगों को जगाने वाला भी है। जैसा कि यीशु ने दृष्टांत में कहा था, यीशु वास्तव में यही कह रहे हैं।

यहाँ बहुत असुविधा है। हाँ, यह एक दोस्त है। यह शर्मनाक है कि एक दोस्त दूसरे की मदद नहीं कर सकता।

लेकिन ध्यान दें कि यीशु यहाँ भी क्या कर रहे हैं। वे राज्य के कामों पर चर्चा करते समय भी इस रिश्ते को सामने लाते हैं। इस अवसर पर वे चार बार मित्र शब्द का उल्लेख करते हैं।

तो हाँ, रीति-रिवाज़ यही तय करते हैं। और यीशु समझाते हैं कि एक मित्र के लिए उठकर माँगने वाले को रोटी देना कितना मुश्किल होगा। बेशक, आम तौर पर, आप उस संदर्भ में रोटी नहीं बनाते और बची हुई रोटी नहीं छोड़ते।

लेकिन हम जानते हैं कि कुछ बचा हुआ भी हो सकता है, और यह दोस्त किसी तरह इस परिदृश्य में ज़रूरत को पूरा करने में सक्षम हो सकता है। लेकिन यीशु हमें याद दिलाना चाहते थे कि इससे पहले कि सुनने वाला यह सोचे कि जो उठकर मदद करने को तैयार नहीं है, वह अच्छा दोस्त नहीं है, वह दृष्टांत में बताता है कि यह एक असुविधा का मामला है। परिवार में अशांति और इससे जुड़े सभी अन्य मुद्दे यहाँ हैं।

लेकिन फिर वह इस बात पर प्रकाश डालता है। देखिए, ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह दोस्त है, बल्कि इसलिए है क्योंकि वह दोस्त जो उस रात देर से आता है, ज़िद करता है। क्योंकि वह ज़िद करता है, इसलिए पड़ोसी भी उसे मदद मांगते हुए सुन सकते हैं।

यीशु के शब्दों में उस दृढ़ता के कारण और मैंने पढ़ा, मैं तुमसे कहता हूँ, यद्यपि वह उठकर उसे कुछ नहीं देगा क्योंकि वह उसका मित्र है, फिर भी उसकी धृष्टता के कारण, उसके हठ के कारण, वह उठकर उसे वह सब देगा जिसकी उसे आवश्यकता है। इसी बात पर यीशु उनसे कहते हैं, तुम्हें माँगना चाहिए, और वह तुम्हें दिया जाएगा। तुम्हें खोजना चाहिए, और तुम पाओगे।

तुम्हें खटखटाना चाहिए, और यह तुम्हारे लिए खुल जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो खोजता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए यह खुल जाएगा। यही कथन मैथ्यू में यीशु के पहाड़ी उपदेश में अध्याय छह में दोहराया गया है।

लेकिन यीशु इसे प्रार्थना पर चर्चा से जोड़ते हुए क्या कर रहे हैं, वह यह है। हम यहाँ जिस पिता के बारे में बात कर रहे हैं, उसे समझें: यीशु इस पिता से पूछने की कोशिश कर रहे हैं; इस पिता को पुकारें, अगर आपको जवाब नहीं मिल रहा है तो लगे रहें, पूछें और पूछते रहें, खोजते रहें और खोजते रहें, खटखटाते रहें और खटखटाते रहें, और फिर वह टीम को बाहर लाता है। याद रखें, उन्होंने प्रार्थना की शुरुआत पद एक और दो में की, यह कहते हुए कि आपको अपने पिता से प्रार्थना करनी चाहिए।

अब वह उस विशेष विषय पर वापस जाता है और कहता है, अब, आपको यह बताने के बाद, मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ। तुम में ऐसा कौन पिता है, जिसका पुत्र यदि मछली माँगे, तो मछली के बदले उसे साँप दे? या यदि वह अण्डा माँगे, तो उसे बिच्छू दे? इसलिए जब तुम जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?

इससे पहले कि मैं इस पर विस्तार से बताऊँ, बस उस पाठ को फिर से देखें और श्लोक 12 की उस पंक्ति को देखें। यदि तुम अण्डा माँगोगे, तो तुम्हें बिच्छू दिया जाएगा।

शायद आप बिच्छू से परिचित नहीं हैं, और आप पूछते हैं कि अंडे और बिच्छू के बीच क्या समानता है? यदि आप जानते हैं कि बिच्छू कैसा होता है, तो यदि आप बिच्छू को मारते हैं या उस पर पैर रखते हैं, तो उसके आंतरिक अंग फट जाते हैं। यह अंडे के मिश्रण जैसा दिखता है, एक पीला मिश्रण। एक गाँव के लड़के के रूप में, कई बार, मेरे जूतों में बिच्छू थे। मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पैर डालकर उन्हें कुचल दूँगा और यह सब, और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह एक अच्छा एहसास नहीं है।

आप हमेशा खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि आपको उस बिच्छू ने नहीं मारा क्योंकि बिच्छू ज़हरीले हो सकते हैं। लेकिन पिता के इस उदाहरण में यीशु क्या कह रहे हैं? यीशु अपने श्रोताओं को याद दिलाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि शिष्य जानना चाहते हैं कि वे, स्वाभाविक पिता होने के नाते, पिता की संवेदनशीलताओं के बारे में बहुत जागरूक हैं। और स्वाभाविक पिता होने के नाते, वे हमेशा अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा चाहते हैं।

यहाँ, मैं इस धारणा के खिलाफ़ एक आलोचना प्रस्तुत करता हूँ, विशेष रूप से पश्चिमी सभ्यता में, कि प्राचीन पिता हमेशा अत्याचारी होते थे, अपने बच्चों की बहुत ज़्यादा परवाह नहीं करते थे, और पिता की छवि हमेशा एक समस्या होती थी। मैं प्राचीन दुनिया में पारिवारिक गतिशीलता और नए नियम में घरों का अध्ययन करता हूँ। मुझे नहीं पता कि उन्हें यह तथ्य कहाँ से मिला क्योंकि मुझे यह कहीं नहीं मिल रहा है।

ऐसे संदर्भ में हमेशा उनकी धारा होती है जहाँ एक पिता अपने बच्चे के साथ दुर्व्यवहार कर सकता है, और दार्शनिक इसे मिटा सकते हैं और इसकी निंदा कर सकते हैं। हालाँकि, आदर्श पिता हमेशा अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा प्यार करता है और उनकी देखभाल करता है। यह पूरा विचार कि एक पिता एक हृदयहीन पिता है, जो किसी की परवाह नहीं करता है, एक गलत धारणा है जिसे किसी ने हमारी सामाजिक चेतना में डाल दिया है।

आप यहाँ देखिये, यीशु शिष्यों से अपील करते हैं कि उनके आस-पास के जो पिता हैं, वे भी एक पिता की स्वाभाविक संवेदनाओं को जानते हैं जो अपने बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ चाहते हैं। यह उजागर करने की कोशिश करते हुए कि, वास्तव में, परमेश्वर अपने बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ चाहता है और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा और उन्हें सर्वश्रेष्ठ देगा। इसलिए उन्हें माँगना चाहिए और माँगते रहना चाहिए; उन्हें खोजना चाहिए और ढूँढते रहना चाहिए; उन्हें खटखटाना चाहिए और खटखटाते रहना चाहिए।

इसलिए, यदि वे, पिता के रूप में, जानते हैं कि उनके बच्चों के लिए सबसे अच्छा क्या है, तो यीशु उनसे कह रहे हैं कि उन्हें अपने बच्चों को अच्छे उपहार देने के लिए स्वर्गीय पिता की खुशी पर भरोसा करना चाहिए। जब वे अपने बच्चों को अच्छी चीजें देने में सक्षम होते हैं, तो उन्हें खुद खुशी होती है, और वे अपने बच्चों के लिए बिच्छू या साँप या सर्प नहीं देंगे। इसलिए, स्वर्गीय पिता को अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा देने में अच्छी खुशी होती है।

यहाँ, स्वर्गीय पिता की कल्पना को उजागर करना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि स्वर्ग में एक पिता है जो वह प्रदान कर सकता है और वह कर सकता है जो सांसारिक पिता नहीं कर सकता। मैं अपने बच्चों से प्यार करता हूँ; मैं उनसे बहुत प्यार करता हूँ, और मैं उनके लिए सब कुछ करूँगा। लेकिन मैं अपने बच्चों के लिए कभी भी आधा चौथाई या 10% भी नहीं कर सकता जो स्वर्गीय पिता उनके लिए कर सकता है।

यहाँ ध्यान देने वाली दूसरी बात यह है कि लूका ने प्रार्थना और पवित्र आत्मा पर ज़ोर दिया है। लूका श्रोताओं, शिष्यों को याद दिलाना चाहता था कि सिर्फ़ पिता ही अपने बच्चों को रोटी नहीं देता; सिर्फ़ पिता ही अपने बच्चों को माफ़ नहीं करता और उन्हें प्रलोभन में नहीं डालता। पिता को उन्हें पवित्र आत्मा देने का भी सौभाग्य प्राप्त है।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, इस व्याख्यान श्रृंखला के बाद, मैं आपको याद दिलाना चाहूँगा कि हमारे पास एक स्वर्गीय पिता है जो हमसे बहुत प्यार करता है। उसने आपको अपनी छवि और समानता में बनाया है, और समाज जो चाहता है उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया है, या आपको इस तरह से ढालना चाहता है जैसे कि आप महत्वपूर्ण नहीं हैं। आप स्वर्गीय पिता की नज़र में महत्वपूर्ण हैं, और स्वर्गीय पिता आपकी बात सुनने के लिए उत्सुक और इच्छुक हैं यदि आपने यीशु मसीह को अपना प्रभु और व्यक्तिगत उद्धारकर्ता बनने का मौका दिया है।

आप परमेश्वर को अपने पिता के रूप में पुकार सकते हैं; आप उनसे प्रार्थना कर सकते हैं। आप उनसे प्रार्थना कर सकते हैं जैसा कि लूका के प्रभु की प्रार्थना के संस्करण में बताया गया है। और आप उनसे लगातार प्रार्थना कर सकते हैं, यह जानते हुए कि आपका स्वर्गीय पिता अपने बच्चों को अच्छी खुशी या अच्छी चीज़ें, अच्छे उपहार देना चाहता है।

मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन एक अकेली माँ द्वारा पाला जाना और अपने स्वर्गीय पिता की इस समझ को पूरी तरह से समझना, ईश्वर में मेरी स्थिति को मजबूत करता है, ईश्वर को महिमा देने वाला जीवन जीने के मेरे संकल्प को मजबूत करता है, और मुझे आगे बढ़ने की वह हिम्मत देता है, यह जानते हुए कि मेरे स्वर्गीय पिता हमेशा एक अच्छे उद्देश्य के लिए मार्गदर्शन, निर्देशन और मार्गदर्शन करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ, और मुझे विश्वास है कि जब आप इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करेंगे, तो आप न केवल उस बौद्धिक अंतर्दृष्टि के बारे में सोचेंगे जो आपको मिल सकती है, बल्कि आप उस संबंधपरक आयाम के बारे में भी सोचेंगे जो यीशु अपने प्रवचन में लाते हैं। उनका एक पिता के साथ रिश्ता था, जिससे आप प्रार्थना कर सकते हैं, जो आपकी परवाह करता है, और जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं।

ईश्वर करे, पिता आपको वह अनुग्रह प्रदान करे जिसकी आपको आवश्यकता है। वह आपको वह शक्ति और संकल्प प्रदान करे जिसकी आपको यीशु के वफादार अनुयायी बनने के लिए आवश्यकता है, क्या मुझे कहना चाहिए कि प्रभु यीशु के वफादार शिष्य बनें जैसा कि वह चाहते हैं कि हम बनें। ईश्वर आपको आशीर्वाद दें, और मुझे आशा है कि आप हमारे साथ सीखते रहेंगे।

धन्यवाद।

यह डॉ. डैनियल डार्को हैं जो लूका के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 17 है, प्रार्थना पर यीशु, लूका 11:1-13।